अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : आठवीं - जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 07 जनवरी, 2018)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

सावधान

1. परीक्षा में नकल नहीं करें। 2. प्रामाणिकता से परीक्षा देकर ईमानदारी का परिचय दे। 3. मायावी नहीं मेधावी बनें। 4. नकल से नहीं अकल से काम लें।

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
5. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	6	कुल योग
प्राप्तांक							
पूर्णांक	10	10	10	20	18	32	100
पुनः जाँच							

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) क्षयोपशम भाव का भेद है-

(क) जीवत्व (ख) भव्यत्व

(ग) अभव्यत्व (घ) मतिज्ञान ( )

(b) औदयिक भाव के भेद हैं-

(क) 10 (ख) 18

(ग) 21 (घ) 3 ( )

(c) तेरहवें गुणस्थान में भाव हैं -

(क) 3 (ख) 5

(ग) 4 (घ) 2 ( )

(d) क्षायिक और पारिमाणिक भाव रूप द्विसंयोगी भाव मिलता है-

(क) सिद्धों में (ख) तिर्यंच गति में

(ग) मनुष्य में (घ) आचार्यों में ( )

(e) छठे देवलोक के देव की आहारेच्छा का जघन्य काल है-

(क) प्रति समय (ख) 10 हजार वर्ष

(ग) पृथक्त्व दिवस (घ) एक हजार वर्ष ( )

(f) मनुष्य की आहारेच्छा का जघन्य काल है-

(क) अन्तर्मुहूर्त (ख) 2 हजार वर्ष

(ग) 2 दिन (घ) तीन दिन ( )

(g) अनाहारक में गुणस्थान है-

(क) पहला गुणस्थान (ख) 1 से 4 गुणस्थान

(ग) 1,2,13 व 14 गुण. (घ) 1,2,4 गुणस्थान ( )

(h) अभाषक में उपयोग है-

(क) 6 (ख) 8

(ग) 11 (घ) 5 ( )

(i) अवेदी में जीव के भेद हैं-

(क) 15 (ख) 5

(ग) 563 (घ) 553 ( )

(j) आहार का थोकड़ा इस सूत्र में है-

(क) भगवती सूत्र (ख) नंदीसूत्र

(ग) अनुयोग द्वार सूत्र (घ) पन्नवणा सूत्र ( )

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1 = (10)**

(a) कालोदधि समुद्र का जल शांत है, वहाँ बड़वानल नहीं होता है। ( )

(b) जृंभक देव वैताढ्य और कंचनगिरि पर मिलते हैं। ( )

(c) कर्मों के उदय से होने वाले भाव को क्षायोपशमिक भाव कहते हैं। ( )

(d) उपशम चारित्र 4 से 11 गुणस्थान पर्यन्त होता है। ( )

(e) शुभयोगी उपयोगपूर्वक, सावधानीपूर्वक समत्त्व भावों के साथ योगों की प्रवृत्ति करता है। ( )

(f) कापोत लेशी एकेन्द्रिय अनारंभी भी होते हैं। ( )

(g) तीन विकलेन्द्रिय की आहारेच्छा जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त का है। ( )

(h) नैरयिक अचित्त पुद्गलों का आहार करते हैं, सचित्त और मिश्र का आहार नहीं करते हैं। ( )

(i) नारकी से देव संख्यात गुणा है। ( )

(j) देवी में 6 लेश्या पायी जाती हैं। ( )

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **10x1 = (10)**

(a)	क्षयोपशम समकित में	(क) जीव के भेद 347	.....
(b)	अनाहारक में	(ख) जीव के भेद 231	.....
(c)	पर्याप्त में	(ग) जीव के भेद 191	.....
(d)	असन्नी में	(घ) जीव के भेद 275	.....
(e)	हुण्डक संस्थान में	(च) जीव के भेद 212	.....
(f)	अभाषक में	(छ) जीव के भेद 193	.....
(g)	समचतुरस्र संस्थान में	(ज) जीव के भेद 118	.....
(h)	दो दृष्टि में	(झ) जीव के भेद 358	.....
(i)	अढ़ाई द्वीप के बाहर	(य) जीव के भेद 410	.....
(j)	वज्र ऋषभ नाराच संहनन	(र) जीव के भेद 170	.....

प्र.4 मुझे पहचानो :- **10x2=(20)**

(a) मुझमें प्रदेश और विपाक दोनों प्रकार के कर्मोदय रूक जाते हैं। .....

(b) मैं शरीर पर्याप्ति होने के बाद रोमों (त्वचा)के द्वारा होने वाला आहार है। .....

(c) मुझमें अभव्य तथा सिद्ध दोनों का समावेश किया जाता है। .....

(d) मैं समकित मोहनीय के चरम दलिक का वेदक हूँ। .....

(e) मेरी आहारेच्छा का उत्कृष्ट काल 8 हजार वर्ष है। .....

(f) सिद्ध शिला में सूक्ष्म के अलावा बादर के मेरे दो भेद पाये जाते हैं। .....

(g) मैं एक प्रकार की समकित हूँ, जिसमें नरकानुपूर्वी का उदय नहीं होता है। .....

(h) मुझमें 14 योग व जीव के 5 भेद होते हैं। .....

(i) मुझमें जीव का भेद 7, गुणस्थान 3, योग 5 तथा लेश्या 6 पायी जाती हैं। .....

(j) मैं पहले और दूसरे देवलोक के नीचे के प्रतर में रहने वाला किल्विषी हूँ। .....

प्र.5 एक या दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- **9x2=(18)**

(a) शाश्वत किसे कहते हैं?

.....

.....

.....

(b) सान्निपातिक भाव का पंच संयोगी भंग लिखिए और यह भंग किसमें पाया जाता है ?

.....

.....

.....

(c) द्विकसंयागी सान्निपातिक भाव लिखिए एवं यह किसमें पाया जाता है ?

.....

.....

.....

(d) **क्षायिक भाव के 9 भेद लिखिए।**

.....

.....

.....

(e) **पारिणामिक भाव को परिभाषित कीजिए।**

.....

.....

.....

(f) **भरत क्षेत्र में जीव के भेद लिखिए।**

.....

.....

.....

(g) **जीवधड़ा से मनयोगी में जीव के भेद लिखिए।**

.....

.....

.....

(h) **तेजो लेश्या में गुणस्थान, योग, उपयोग लिखिए।**

.....

.....

.....

(i) **परित्त द्वार की अल्पबहुत्व लिखिए।**

.....

.....

.....

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार वाक्यों में लिखिए : -(कोई 8) **8x4=(32)**

(a) **संसारी जीवों के भेद करते हुए उसमें आत्मारंभी आदि की विवक्षा कीजिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(b) **औदयिक भाव के 21 भेदों के नाम लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(c) **दृष्टि द्वार के कोई चार बोलों में चारों गति में पाये जाने वाले जीव के भेद लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(d) **नीचे लोक में जीव के भेद लिखिए तथा वहाँ मनुष्य के भेद मानने के क्या कारण है ?**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(e) **वैक्रिय मिश्र काय योग में जीव के भेद स्पष्ट कीजिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(f) **वेद द्वार के बोलों में बासठिया लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(g) **दसवें गुणस्थान में अनाकार उपयोग नहीं मानने का कारण लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(h) **भावों के चतु:संयोगी भंगों को लिखिए तथा ये किनमें पाये जाते हैं ?**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(i) **कषाय द्वार के बोलों की अल्पबहुत्व लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....